दिनाँक 26.2.18 को उत्तराखंड फॉरेस्ट ट्रेनिंग अकेडमी, हल्दवानी (जिला नैनीताल) के रेंज फॉरेस्ट आफिसर्स बैच (2017-19) के 33 प्रशिक्षणार्थियों का शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में भ्रमण

उत्तराखंड फॉरेस्ट ट्रेनिंग अकेडमी हल्दवानी (जिला नैनीताल) के 33 रेंज फॉरेस्ट आफिसर्स (2017-19) बैच के प्रशिक्षणार्थियों के दल ने संकाय सदस्य डॉ. सी. के. कविदयाल, सेवानिवृत्त वन संरक्षक एवं श्री टी. डी. तिवारी, फॉरेस्ट रेंज ऑफिसर के साथ दिनांक 26.2.18 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण कर वानिकी शोध गतिविधियों की जानकारी ली। भ्रमण के प्रारम्भ में श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से., प्रभागाध्यक्ष, कृषि वानिकी एवं विस्तार ने प्रशिक्षणार्थी अधिकारियों को पावर-पॉइंट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से संस्थान की शोध गतिविधियों की जानकारी प्रदान की।

वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को अपने संबोधन में संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्य के बार में बताते हुए कहा कि यह संस्थान शुष्क भूमि में शुष्क वातावरण (dry environment) के लिए कार्य करता है, जिसमें मृदा एवं जल संरक्षण , वर्षा जल संग्रहण , जैव-विविधता आंकलन , पौधारोपण तकनीक का वन वर्धन पहलू, लवणीय भूमि , कृषि वानिकी व जलवायु परिवर्तन का शमन (mitigation) भी शामिल है। डॉ. सिंह ने शुष्क भूमि (dry lands) शुष्कता सूचकांक (Aridity index) जैसे तकनीकी पहलुओं की भी जानकारी दी। उन्होंने परस्पर संवाद से प्रशिक्षणार्थियों की जिज्ञासा का समाधान भी किया। उन्होंने कहा कि शुष्क क्षेत्रों में भूमि का अवक्रमण मरुस्थलीकरण है। डॉ. सिंह ने मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया की तकनीकी जानकारी दी। डॉ. सिंह ने पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा एवं जल संरक्षण तथा वर्षा जल संग्रहण तकनीक की चर्चा करते हुए कंटूर ट्रेंच बनाते वक्त बरतने वाली सावधानियाँ बताई।

इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों के दल ने विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर वानिकी शोध कार्यों की जानकारी ली। आणविक जैव-विज्ञान प्रयोगशाला में श्री नीतीश दवे PhD Scholar (शोधार्थी) ने जैव-तकनीक के बारे में बताया ।

ICP-MS प्रयोगशाला में वैज्ञानिक श्री. एन. बाला ने कार्बन स्टॉक , मृदा पोषक तत्वों जैसे मृदा विश्लेषण के बारे में जानकारी देते हुए आई.सी.पी.-एम.एस. (ICP-MS Inductively Coupled Plasma Mass Spectrometer) के बारे में जानकारी दी। श्री बाला ने नहरी क्षेत्र में जल प्लावन की समस्या की चर्चा करते हुए ऐसी भूमि का जैव-जल निकासी द्वारा पुनर्संधारण की जानकारी दी।

जी. आई.एस. (GIS) प्रयोगशाला में श्री गंगाराम चौधरी , तकनीकी अधिकारी ने फील्ड में प्रेक्षित (observe) किए गए विभिन्न मृदा संबंधी आंकड़े जैसे कार्बन , जैविक पदार्थ (organic matter), अजैविक पदार्थ (inorganic matter) किस प्रकार की मृदा है, मृदा गुणों का संक्षिप्त ब्योरा (summarized soil properly) को नक्शे पर दर्शा कर फॉरेस्ट मैपिंग करने और उसकी उपयोगिता की जानकारी दी।

अकाष्ठ वनोपाज़ प्रभाग में श्री उमाराम चौधरी ने वृक्षों से प्राप्त सब्जी/फल , सांगरी - *प्रोसोपिस सिनेरेरिया* की फली, केर के फल (*Capparis decidua*), कुमट (*Acacia senegal*) के बीज के बारे में जानकारी दी। विभिन्न प्रकार की लकड़ियों जैसे *प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा*, *अकेशिया टोर्टलिस*, *प्रोसोपिस सिनेरेरिया* , *अकेशिया सेनेगल* के फर्नीचर, नीम की लकड़ी पर नक्काशी (carving) का भी अवलोकन कराया।

वन संवर्धन प्रभाग की बीज प्रयोगशाला में श्री सरज लाल मीणा (वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी) ने बीजों की सफाई, अंकुरण जैसी प्रक्रियाओं के प्रयोग में आने वाले विभिन्न उपकरणों की जानकारी दी।

वन संरक्षण प्रभाग की केंद्रीय प्रयोगशाला में श्री सुनील चौधरी , तकनीकी अधिकारी ने वृक्षों में लगने वाले विभिन्न रोगों की रोकथाम हेतु जैविक उपायों तथा वृद्धि (Growth) बढ़ाने हेतु जैविक उर्वरक से संबन्धित किए जा रहे शोध कार्यों के बारे में बताया। प्रशिक्षणार्थियों को परिसर स्थित रोहिडा प्रजाति के वृक्ष की जानकारी दी।

तत्पश्चात प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर केंद्र पर प्रदर्शित वानिकी शोध संबंधी विभिन्न सूचनाओं एवं सामग्री का अवलोकन किया। निर्वचन केंद्र पर श्री चौधरी ने अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन, टिब्बा स्थिरीकरण, जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन, कृषि वानिकी से संबन्धित जानकारी, लवण प्रभावित भूमि का पुनर्वासन, राजस्थान के विभिन्न वृक्षों, मुख्य वृक्ष प्रजातियों के बीजों से संबन्धित जानकारी इत्यादि का अवलोकन कराते हुए इस संबंध में जानकारी भी करवाई।

भ्रमण कार्यक्रम का समन्वयन श्री उमाराम चौधरी ने किया। भ्रमण कार्यक्रम में श्री धानाराम , तकनीकी अधिकारी एवं श्री तेजाराम का सहयोग रहा।

26.02.2018 10:32

26.02.2018 09:35

26.02.2018 10:52

26.02.2018 11:26

26.02.2018 11:35